

अनुक्रमणिका

राम रसोई

तिथि विचार

ज्ञान वह जिसका उपयोग हो

नास्तिकता के भी लाभ हैं।

प्रारब्ध या पुरुषार्थ

जब गणेश भूखे ही रह गये

स्वर्ग में कौन जाएगा?

धर्मप्रचार में आप भी हमारे सहयोगी बन सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

Mahesh Batish, Vishavkarma Nagar, Main Street,

Mandi Gobindgarh-147301 (Punjab) India

Ph.: +91-1765- 506521

E-mail : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

Visit our Home page at : www.geocities.com/dharamvichar

राम रसोई

“रोटी, कपड़ा और मकान, जीवन के ये तीन निशान” बहुत पहले से हम यह बात सुनते आ रहे हैं। रोटी यानि भोजन जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। चाहे मनुष्य हो या अन्य कोई जीव—जन्तु भोजन के बिना कोई जीवित नहीं रह सकता। भगवान ने हर जीव के लिए भोजन की व्यवस्था कर रखी है। कोई कीड़ा किसी वृक्ष की कोटर में जन्म लेकर अपना सारा जीवन वहीं व्यतीत कर देता है। प्रभु ने उस कीड़े के लिए सारी व्यवस्था उसी छोटी सी कोटर में कर रखी होती है। पृथ्वी पर हर जगह जीवन है तथा साथ ही उस जीवन को बनाये रखने के लिए भोजन भी है। सृष्टिकर्ता ने मनुष्य के लिए भी भोजन की पर्याप्त व्यवस्था कर रखी है लेकिन फिर भी उसे भोजन के लिए कठिनाई आती रहती है। यह कठिनाई मनुष्यों द्वारा स्वयं पैदा की गई है। पृथ्वी पर एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में जितने कीड़े—मकौड़े हैं उतने पूरी पृथ्वी पर मनुष्य हैं। इस तरह पृथ्वी पर मनुष्य एक अति अल्पसंख्यक जीव है। इतने पर भी हैरानी की बात है कि बहुसंख्यक जीवों को भोजन प्राप्त करने के लिए इतनी कठिनाई नहीं होती जितनी कि अल्पसंख्यक मनुष्यों को!!

इस कठिनाई के मूल में मनुष्य का अपना ही स्वार्थ तथा संग्रहभावना है। यदि हम मनुष्य ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ यानि पूरी पृथ्वी पर हम एक परिवार की तरह हैं, इस भावना का पालन करें तो किसी के लिए कोई अभाव हो ही नहीं

सकता। लेकिन मनुष्य में संग्रह की इच्छा इतनी दृढ़ है कि वह इस भावना का पालन कर ही नहीं सकता। वह जब अपनी आवश्यकताओं हेतु संग्रह कर लेता है तो अपने संतान के लिए संग्रह करना शुरू कर देता है। इसके बाद वह अपनी आने वाली पीढ़ियों के बारे में सोचने लगता है। मनुष्य चाहता है कि वह अपनी आने वाली समस्त पीढ़ियों के लिए पर्याप्त व्यवस्था कर जाये। वास्तव में मनुष्य की यह सोच बिल्कुल सही है लेकिन इसे करने का ढंग गलत है। संग्रह करने में भी कोई बुराई नहीं है लेकिन इस संग्रह का उपयोग अपने वृहद् पृथ्वी रुपी परिवार के लिए किया जाये तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होती है। लेकिन ज्यादातर मनुष्य अज्ञानवश अपने कर्तव्य से भागते रहते हैं। जीवन— मृत्यु के बारे में हमें कुछ नहीं पता। आज का सम्पन्न व्यक्ति हो सकता है कल किसी निधनि परिवार में जन्म ले ले। इस अवस्था में उस व्यक्ति को निर्धन परिवार में जन्म लेने के कारण निर्धनता भोगनी पड़ेगी। लेकिन यदि वही व्यक्ति अपने सम्पन्न जन्म के समय बहुत से निर्धनों का कल्याण कर देता है तो हो सकता है कि वह अपने भविष्य में मिलने वाले परिवार के अभाव को भी इसी जन्म में दूर कर दे। इसमें उसका अपना ही फायदा है।

महात्मा गांधी की एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है कि इस संसार में सब मनुष्यों की आवश्यकता के लिए पर्याप्त साधन हैं लेकिन किसी मनुष्य के लालच के लिए कुछ भी पर्याप्त नहीं। भूमिका बहुत हो गई जो बात हम करना

चाहते हैं चलिए अब उस पर आते हैं। एक व्यक्ति को खाने में चार रोटी और एक-दो कटोरी दाल/सब्जी की ही चाहिए। यह बात चाहे कोई सेठ हो या भिखारी सब पर लागू होती है। पिछले कई दिनों से सामाजिक स्तर पर भोजन व्यवस्था सम्बन्धी विचार मन में आ रहे थे। इन विचारों को मैं राम रसोई मन्थन कहना पसन्द करूंगा।

राम रसोई की परिकल्पना क्या है?

हर शहर में लंगर लगाने वाली बहुत सी संस्थाएँ होती हैं। कई व्यक्ति अपने स्तर पर भी लंगर लगाते रहते हैं। लेकिन अगर हर रोज लंगर लगाना हो तो कितने लंगर लगाये जा सकते हैं, यह सोचने की बात है। इसलिए लंगर की एक ऐसी व्यवस्था की जाये जिसमें लोगों से नाममात्र का मूल्य लिया जाये। यह मूल्य नाममात्र होने पर भी हर रोज दिन में दो बार या दिन भर लंगर चलाने के लिए भी पर्याप्त होगा। इस व्यवस्था में मात्र पाँच रुपये में एक व्यक्ति को भरपेट अच्छे स्तर का भोजन उपलब्ध करवाया जा सकता है।

इस कार्य को करने में कौन सक्षम है?

निसंदेह समस्त समाज के प्रयास द्वारा ही यह कार्य किया जा सकता है लेकिन इस कार्य की उत्तम व्यवस्था कोई लंगर संस्था ही कर सकती है। लंगर संस्थाओं के पास इस कार्य को करने सम्बन्धी योग्यता तथा अनुभव दोनों ही होते हैं। वे अपने प्रयासों द्वारा साधन भी शीघ्र ही जुटा सकती हैं तथा व्यवस्था

भी अच्छे ढंग से चला सकती हैं।

राम रसोई की आवश्यकता ही क्या है : शंकायें तथा समाधान

शंका : जब शहर में इतने लंगर चलते हैं तो राम रसोई की आवश्यकता ही क्या है?

निराकरण : व्यक्ति दिन में दो या तीन बार खाना खाता है। ऐसे में क्या हर रोज दो-तीन बार लंगर चलाना संभव है? मान लीजिये लंगर रोज चला भी लिया तो कितने लोगों को उसका लाभ दिया जा सकता है। चलिये यह भी मान लेते हैं कि लंगर चलाने वालों में बहुत सामर्थ्य है लेकिन फिर भी कितने लोग उसका लाभ लेना चाहेंगे। बहुत ज्यादा लोग उसका लाभ क्यों नहीं लेना चाहेंगे इस बारे में लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है इसे आप स्वयं ही समझ सकते हैं।

शंका : हममें जितना सामर्थ्य होगा उतना लंगर लगा लेंगे किसी से खाने का पैसा क्यों ले?

समाधान : आप कोई कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं तो यह एक बहुत अच्छी बात है। अगर आप अपने कार्य में किसी से कोई सहयोग ले लेते हैं, चाहे यह आपके कार्य से लाभ लेने वालों से थोड़े से पैसों के रूप में ही है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। इससे आपके कार्य करने का सामर्थ्य बढ़ेगा। साथ ही इससे सामाजिक व्यवस्था पर भी स्वास्थ्यकारी प्रभाव पड़ेंगे।

शंका : अगर हम लंगर में पैसे लेने लगे तो लंगर और होटल में क्या अन्तर रह

जायेगा?

समाधान : अगर लंगर में नाममात्र का मूल्य ले भी लिया जाये तो भी इसे होटल नहीं कह सकते। लेकिन लंगर की अपेक्षा इसे राम रसोई कहना ज्यादा अच्छा लगता है। इसमें दो बातें समझ लें कि राम रसोई का कोई व्यावसायिक उद्देश्य नहीं होगा और यह बात भी सबको स्पष्ट ही होगी कि पाँच रुपये में इसकी व्यवस्था का खर्च ही पूरा हो जाये यही एक उपलब्धि होगी।

शंका : चलिये मान लेते हैं कि इससे लोगों का भला होगा लेकिन लोग तो हमें फिर भी कहेंगे कि इन्होंने पैसे कमाने का नया तरीका निकाल लिया है। उसका क्या?

समाधान : अगर यह सोचा जाये कि लोग इसे पैसा कमाने का नया ढंग समझेंगे तो निशंक हो जायें। लोकराय ने तो भगवान राम और माता सीता तक को न छोड़ा, हम—आप किस खेत की मूली हैं! किसी ने लोककल्याण का कोई कार्य करना हो तो वह त्यागभाव से अपनी मस्त चाल में चलता रहे लोगों की भावना तो स्वयं ही उसके अनुकूल हो जायेगी। कल्याणकारी कार्य अगर भगवान के लिए ही किये जायें तो कार्य करने में कोई शंका भी नहीं रहेगी तथा कार्य भी अच्छे ढंग से हो जायेंगे। ऐसा विचार करें कि यह कार्य मैं अपने लिए नहीं कर रहा, दूसरों के लिए भी इतना नहीं कर रहा जितना कि अपने तथा दूसरों के हृदय में स्थित ईश्वर की सन्तुष्टि के लिए कर रहा हूँ। ऐसा विचार करने से

समस्त हृदयों में स्थित ईश्वर आपकी बात को समझेंगे तथा सबको आपके अनुकूल बना देंगे।

राम रसोई के सम्बन्ध में और भी शंकायें हो सकती हैं लेकिन इससे होने वाले लाभ समस्त शंकायों का निवारण कर सकते हैं।

राम रसोई के फायदे।

राम रसोई के सम्बन्ध में मैंने अपने एक मित्र से बात की तो मुझे तुरन्त नकारात्मक राय मिल गई। उनका मानना है कि लोगों का स्टेटस इतना है कि वे राम रसोई जैसी परिकल्पना का समर्थन नहीं करेंगे। इस सम्बन्ध में अपना मानना तो यह है कि लोगों का वास्तविक स्टेटस वह है जो दूसरों की भलाई के लिए हो। जो स्टेटस उनको ऐसा करने से रोके वह तो उनका अहंकार ही है।

राम रसोई की विशेषता यह होगी कि इसमें हर कोई बिना झिझक के भोजन कर सकेगा। अगर दैनिक लंगर लगा भी दिया जाये तो इसमें आने वाले ज्यादातर व्यक्ति बहुत निम्न आय वर्ग के होंगे। सामान्य या ज्यादा आय वाला व्यक्ति वहां शायद लाभ लेने जायेगा भी नहीं, क्योंकि ऐसा करने से उसके पुरुषार्थ का अपमान होता है और यह बात किसी हद तक सही भी है। लेकिन राम रसोई में जब कोई व्यक्ति मूल्य चुकायेगा तो उसे वहां भोजन करने में किसी तरह की झिझक नहीं होगी। इससे ज्यादा से ज्यादा लोग इस सुविधा का लाभ

लेंगे।

राम रसोई की व्यवस्था

राम रसोई की व्यवस्था में स्वयंसेवक तथा वेतन वाले कर्मचारियों की जरूरत होगी। भोजन एक जगह तैयार करके शहर में दो-तीन जगहों पर वितरण की व्यवस्था हो तो सबसे अच्छा है। इससे खर्च भी बचेगा तथा व्यवस्था सम्बन्धी कार्य भी कम होगा। राम रसोई को अच्छी साज-सज्जा के साथ आकर्षक ढंग में प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे लोग स्वयं इसके प्रति आकर्षित होंगे। राम रसोई के फायदों तथा व्यवस्था सम्बन्धी और भी विचार विमर्श किया जा सकता है यदि कोई जनकल्याण के लिए इस व्यवस्था को लागू करने की इच्छा रखता हो।

तिथि विचार

9 अप्रैल 2005 से 10 मार्च 2005 तक

विक्रमी संवत 2062, शक संवत 1927, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु, सूर्य उत्तरायण

9 अप्रैल 2005 दिन शनिवार, शुक्लपक्ष आरम्भ। एकम् तिथि 10 की प्रातः 1:00 तक रहेगी, रेवती नक्षत्र प्रातः 10:30 पर समाप्त। सूर्योदय 6:05 पर होकर सांय 6:41 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 19 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 27 है। विक्रमी संवत 2062 आरम्भ, वासन्त नवरात्र आरम्भ, पंचक समाप्त।

10 अप्रैल 2005 दिन रविवार, शुक्लपक्ष। द्वितीया तिथि मध्यरात्रि 12:27 तक रहेगी। अश्विनी नक्षत्र प्रातः 10:20 पर समाप्त। सूर्योदय 6:04 पर होकर सांय 6:42 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 20 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 28 है।

11 अप्रैल 2005 दिन सोमवार, शुक्लपक्ष। तृतीया तिथि मध्यरात्रि 12:35 तक रहेगी, भरणी नक्षत्र प्रातः 10:46 पर समाप्त। सूर्योदय 6:03 पर होकर सांय 6:43 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 21 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 29 है। गौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती।

12 अप्रैल 2005 दिन मंगलवार, शुक्लपक्ष। चतुर्थी तिथि 13 की प्रातः 1:23 तक रहेगी। कृतिका नक्षत्र प्रातः 11:49 पर समाप्त। सूर्योदय 6:02 पर होकर सांय 6:43 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 22 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 30 है।

- 13 अप्रैल 2005 दिन बुधवार, शुक्लपक्ष। पंचमी तिथि 14 की प्रातः 2:45 तक रहेगी। रोहिणी नक्षत्र दोपहर 1:28 पर समाप्त। सूर्योदय 6:01 पर होकर सांय 6:44 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 23 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 1 है। नाग पंचमी, श्री पंचमी।
- 14 अप्रैल 2005 दिन गुरुवार, शुक्लपक्ष। षष्ठी तिथि 15 की प्रातः 4:39 तक रहेगी, मृगशिरा नक्षत्र दोपहर 3:41 पर समाप्त। सूर्योदय 5:59 पर होकर सांय 6:45 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 24 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 2 है। स्कन्द षष्ठी।
- 15 अप्रैल 2005 दिन शुक्रवार, शुक्लपक्ष। सप्तमी तिथि रहेगी, आर्द्रा नक्षत्र सांय 6:20 पर समाप्त। सूर्योदय 5:58 पर होकर सांय 6:45 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 25 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 3 है।
- 16 अप्रैल 2005 दिन शनिवार, शुक्लपक्ष। सप्तमी तिथि प्रातः 6:54 तक रहेगी। पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 9:13 पर समाप्त। सूर्योदय 5:57 पर होकर सांय 6:46 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 26 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 4 है।
- 17 अप्रैल 2005 दिन रविवार, शुक्लपक्ष। अष्टमी तिथि प्रातः 9:18 तक रहेगी, पुष्य नक्षत्र मध्यरात्रि 12:07 तक रहेगा। सूर्योदय 5:56 पर होकर सांय 6:47 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 27 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 5 है। श्रीदुर्गाष्टमी।

- 18 अप्रैल 2005 दिन सोमवार, शुक्लपक्ष। नवमी तिथि प्रातः 11:38 तक रहेगी, अश्लेषा नक्षत्र 19 की प्रातः 2:51 पर समाप्त। सूर्योदय 5:55 पर होकर सांय 6:47 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 28 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 6 है। श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त।
- 19 अप्रैल 2005 दिन मंगलवार, शुक्लपक्ष। दशमी तिथि दोपहर 1:41 तक रहेगी, मघा नक्षत्र 20 की प्रातः 5:12 पर समाप्त। सूर्योदय 5:54 पर होकर सांय 6:48 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 29 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 7 है। ग्रीष्म ऋतु आरम्भ।
- 20 अप्रैल 2005 दिन बुधवार, शुक्लपक्ष। एकादशी तिथि दोपहर 3:16 तक रहेगी। पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र रहेगा। सूर्योदय 5:53 पर होकर सांय 6:49 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 30 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 8 है। कामदा एकादशी व्रत।
- 21 अप्रैल 2005 दिन गुरुवार, शुक्लपक्ष। द्वादशी तिथि सांय 4:17 तक रहेगी। पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र प्रातः 7:02 पर समाप्त। सूर्योदय 5:52 पर होकर सांय 6:49 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 1 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 9 है। प्रदोष व्रत।
- 22 अप्रैल 2005 दिन शुक्रवार, शुक्लपक्ष। त्रयोदशी तिथि सांय 4:41 तक रहेगी, उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र प्रातः 8:17 पर समाप्त। सूर्योदय 5:51 पर होकर सांय

- 6:50 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 2 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 10 है। अनंग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती।
- 23 अप्रैल 2005 दिन शनिवार, शुक्लपक्ष। चतुर्दशी तिथि सांय 4:25 तक रहेगी, हस्त नक्षत्र प्रातः 8:54 पर समाप्त। सूर्योदय 5:50 पर होकर सांय 6:49 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 3 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 11 है। श्रीसत्यनारायण व्रत।
- 24 अप्रैल 2005 दिन रविवार, शुक्लपक्ष। चैत्री पूर्णिमा दोपहर 3:35 तक रहेगी, चित्रा नक्षत्र प्रातः 8:56 पर समाप्त। सूर्योदय 5:49 पर होकर सांय 6:51 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 4 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 12 है। वैशाख स्नान आरम्भ।
- 25 अप्रैल 2005 दिन सोमवार, कृष्णपक्ष आरम्भ। एकम् दोपहर 2:14 तक रहेगी, स्वाति नक्षत्र प्रातः 8:27 पर समाप्त। सूर्योदय 5:48 पर होकर सांय 6:52 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 5 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 13 है। शुक्रउदय।
- 26 अप्रैल 2005 दिन मंगलवार, कृष्णपक्ष। द्वितीया तिथि दोपहर 12:29 तक रहेगी, विशाखा नक्षत्र प्रातः 7:32 पर समाप्त। सूर्योदय 5:47 पर होकर सांय 6:52 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 6 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 14 है।

- 27 अप्रैल 2005 दिन बुधवार, कृष्णपक्ष। तृतीया तिथि प्रातः 10:25 तक रहेगी, अनुराधा नक्षत्र प्रातः 6:16 तदन्तर ज्येष्ठा नक्षत्र 28 की प्रातः 4:27 पर समाप्त। सूर्योदय 5:46 पर होकर सांय 6:53 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 7 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 15 है। श्री गणेश चतुर्थी व्रत।
- 28 अप्रैल 2005 दिन गुरुवार, कृष्णपक्ष। चतुर्थी तिथि प्रातः 8:09 तक रहेगी, मूल नक्षत्र 29 की प्रातः 3:11 पर समाप्त। सूर्योदय 5:45 पर होकर सांय 6:54 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 8 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 16 है।
- 29 अप्रैल 2005 दिन शुक्रवार, कृष्णपक्ष। पंचमी तिथि प्रातः 5:46 तदन्तर षष्ठी तिथि 30 की प्रातः 3:23 तक रहेगी, अतएव षष्ठी तिथिक्षय। पूर्वषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 11:33 पर समाप्त। सूर्योदय 5:44 पर होकर सांय 6:54 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 9 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 17 है।
- 30 अप्रैल 2005 दिन शनिवार, कृष्णपक्ष। सप्तमी तिथि 1 मई की प्रातः 1:01 तक रहेगी। उत्तरषाढ़ा नक्षत्र मध्यरात्रि 11:58 पर समाप्त। सूर्योदय 5:43 पर होकर सांय 6:55 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 10 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 18 है।
- 1 मई 2005 दिन रविवार, कृष्णपक्ष। अष्टमी तिथि रात्रि 10:46 तक रहेगी। श्रवण नक्षत्र रात्रि 10:30 पर समाप्त। सूर्योदय 5:42 पर होकर सांय 6:56 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 11 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 19 है।

- 2 मई 2005 दिन सोमवार, कृष्णपक्ष। नवमी तिथि रात्रि 8:43 तक रहेगी। ६ निष्ठा नक्षत्र रात्रि 9:11 पर समाप्त। सूर्योदय 5:41 पर होकर सांय 6:56 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 12 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 20 है। पंचक आरम्भ।
- 3 मई 2005 दिन मंगलवार, कृष्णपक्ष। दशमी तिथि सांय 6:51 तक रहेगी। शतभिषा नक्षत्र रात्रि 8:06 पर समाप्त। सूर्योदय 5:40 पर होकर सांय 6:57 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 13 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 21 है।
- 4 मई 2005 दिन बुधवार, कृष्णपक्ष। एकादशी तिथि सांय 5:15 तक रहेगी। पूर्वभाद्रपद नक्षत्र सांय 7:16 पर समाप्त। सूर्योदय 5:40 पर होकर सांय 6:58 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 14 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 22 है। वरुथिनी एकादशी व्रत।
- 5 मई 2005 दिन गुरुवार, कृष्णपक्ष। द्वादशी तिथि सांय 3:58 तक रहेगी। उत्तरभाद्रपद नक्षत्र सांय 6:43 पर समाप्त। सूर्योदय 5:39 पर होकर सांय 6:58 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 15 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 23 है। प्रदोष व्रत।
- 6 मई 2005 दिन शुक्रवार, कृष्णपक्ष। त्रयोदशी तिथि दोपहर 2:59 तक रहेगी, रेवती नक्षत्र सांय 6:31 पर समाप्त। सूर्योदय 5:38 पर होकर सांय 6:59 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 16 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 24 है। पंचक

समाप्त ।

- 7 मई 2005 दिन शनिवार, कृष्णपक्ष । चतुर्दशी तिथि दोपहर 2:23 तक रहेगी । अश्विनी नक्षत्र सांय 6:42 पर समाप्त । सूर्योदय 5:37 पर होकर सांय 7:00 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 17 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 25 है ।
- 8 मई 2005 दिन रविवार, कृष्णपक्ष । अमावस्या दोपहर 2:14 तक रहेगी, भरणी नक्षत्र सांय 7:18 पर समाप्त । सूर्योदय 5:36 पर होकर सांय 7:00 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 18 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 26 है ।
- 9 मई 2005 दिन सोमवार, शुक्लपक्ष आरम्भ । एकम् दोपहर 2:32 तक रहेगी, कृत्तिका नक्षत्र सांय 8:23 पर समाप्त । सूर्योदय 5:36 पर होकर सांय 7:01 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 19 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 27 है ।
- 10 मई 2005 दिन मंगलवार, शुक्लपक्ष । द्वितीया दोपहर 3:20 तक रहेगी, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 9:56 पर समाप्त । सूर्योदय 5:35 पर होकर सांय 7:02 पर सूर्यास्त होगा, शक वैशाख 20 तथा प्रविष्टी वैशाख की तिथि 28 है । श्रीपरशुराम जयन्ती, श्रीशिवाजी जयन्ती ।

ज्ञान वह जिसका उपयोग हो सके ।
बुद्धि वह जो कल्याण करे ।

ज्ञान तथा बुद्धि का संग्रह तथा विकास जीवमात्र के लिए बहुत लाभदायक है । लेकिन वास्तविक ज्ञान तथा बुद्धि वह हैं जिनका अपने तथा दूसरों के कल्याण में उपयोग हो सके । थोड़ा ज्ञान एकत्र कर अपने-आप को ही सबसे ज्ञानी समझने लगना तथा जरा सी तीव्र बुद्धि आ जाने पर दूसरों को मूर्ख समझना अवन्नति के ही लक्षण हैं । इसलिए अपने ज्ञान तथा बुद्धि को व्यवहारिकता की कसौटी पर परखना आवश्यक है । अगर इनसे अपना या किसी और का कोई भला नहीं हो सकता तो ये किस काम के ! इस बात को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक छोटी सी कहानी का आश्रय लेते हैं ।

एक भेड़िये और गीदड़ की मुलाकात हुई । भेड़िये ने गीदड़ से पूछा कि तुम कितना पढ़े-लिखे हो ? गीदड़ बोला, 'मैं तो कम ही पढ़ा हूँ । पढ़ाई मैंने बीच में ही छोड़ दी थी ।' भेड़िया बोला, 'फिर तो मैं तुमसे काफी ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ । आज से तुम मुझे साहब कहकर बुलाया करो, समझ गये ।' वे दोनों बातें कर ही रहे थे कि एक शेर सामने आकर खड़ा हो गया । शेर को उस दिन कोई शिकार नहीं मिला था । भूखे होने के कारण ऐसा लगता था जैसे कि वह इन दोनों को ही खा जायेगा । गीदड़ ने भेड़िये से पूछा, 'साहब अब हम क्या करें ?' लेकिन भेड़िया इतना डरा हुआ था कि उसका मुँह ही खुल नहीं रहा था । दोनों

वहां से जाने लगे तो शेर ने कहा, 'मैं आ गया हूँ। अब तुम कहां जा सकते हो?' गीदड़ बोला, 'महाराज! वास्तव में हम दोनों आपके पास ही आ रहे थे। हम दोनों में एक विवाद हो गया है और मुझे विश्वास है कि अपनी बुद्धिमत्ता द्वारा आप ही हमारे इस विवाद का हल कर सकते हैं।' शेर अपनी बुद्धि के बारे में सुनकर प्रसन्न हो गया। शेर ने पूछा, 'मामला क्या है?' गीदड़ बोला, 'महाराज! आज सुबह मैंने दो मुर्गे पकड़ लिये। तभी मुझे यह भेड़िया मिल गया। यह मुझसे बोला कि यह मुझसे ज्यादा पढ़ा-लिखा है इसलिए यह मुझसे एक मुर्गा लेगा। महाराज! आप ही बताइये कि मुर्गे मैंने पकड़ें हैं यह भेड़िया मात्र पढ़ा-लिखा होने के कारण ही एक मुर्गा कैसे ले जा सकता है?' शेर ने भेड़िये की ओर देखते हुए कहा, 'तुम कितने पढ़े-लिखे हो?' लेकिन भेड़िया इतना डर गया था कि उसके दाँत बजने लगे। गीदड़ ने बात सँभाली, वह बोला, 'महाराज यह कहता है कि इसके मुँह में जितने ज्यादा और जितने लम्बे दाँत हैं उतना ही यह पढ़ा-लिखा है।'

'तब तो मैं इससे भी ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ। यह देखो मेरे दाँत कितने ज्यादा और बड़े हैं।' यह कहकर शेर ने अपना पूरा मुँह खोलकर भेड़िये को बिल्कुल पास से दिखा दिया। शेर के भयानक दाँत देखकर भेड़िया चक्कर खाकर आँधें मुँह जमीन पर गिर गया। 'इसे क्या हो गया?' शेर ने पूछा। गीदड़ बोला, 'महाराज! यह आपकी पढ़ाई-लिखाई को देखकर चमत्कृत हो गया है'

तथा आपको साष्टांग प्रणाम कर रहा है। महाराज! मैं भी आपको प्रणाम करता हूँ क्योंकि आपने हमारा मामला सुलझा दिया है।' 'मैनें', शेर बोला। 'हां महाराज! आपने सिद्ध कर दिया कि आप हम दोनों से ज्यादा पढ़े-लिखे हैं इसलिए मेरे द्वारा पकड़े गये दोनों मुर्गों पर आपका अधिकार है। अब हमारा विवाद भी सुलझ गया है। आप मेरे घर चलिये तथा मुर्गे ले लीजिये।' गीदड़ बोला। शेर ने सोचा पहले मैं मुर्गे खा लेता हूँ फिर इन दोनों को भी खा लूँगा। शेर ने कहा, 'ठीक है, चुपचाप मेरे आगे-आगे चलते रहो।' गीदड़ शेर को एक तंग मुँह वाली गुफा के सामने ले गया तथा बोला, 'महाराज! मेरा मित्र अभी आपको मेरे घर से दोनों मुर्गे लाकर दे देगा।' गीदड़ की ऐसी बात सुनकर भेड़िया उस गुफा में घुसने लगा। गुफा का मुँह तंग था लेकिन मरता क्या न करता, भेड़िया पूरा जोर लगाकर उस तंग मुँह वाली गुफा में समा गया। जब काफी देर तक भेड़िया बाहर न निकला तो गीदड़ बोला, 'महाराज मैं देखकर आता हूँ कि कहीं भेड़िया दोनों मुर्गे स्वयं ही तो नहीं खा रहा।' यह कहकर गीदड़ भी उस गुफा में समा गया। जब काफी देर तक शेर गुफा के सामने खड़ा रहा तो उसकी समझ में आया कि ये दोनों तो उसे मूर्ख बना गये हैं। शेर को बहुत ज्यादा क्रोध आ गया, शेर भूल गया कि वह ज्यादा पढ़ा-लिखा है तथा वह गुफा के मुहाने से मुँह लगाकर बहुत जोर-जोर से गुर्राने लगा। जब शेर थक-हार कर वापिस चला गया तो गीदड़ ने जोर लगाकर भेड़िये को गुफा से

बाहर निकाला। भेड़िये ने कहा, 'तुम कम पढ़े—लिखे हो सकते हो लेकिन बुद्धि तुममें बहुत है।' 'धन्यवाद साहब', गीदड़ मुस्कुराकर बोला।

कहानी थोड़ी व्यंग्यात्मक है लेकिन इससे ज्ञान तथा बुद्धि के व्यावहारिक उपयोग के बारे में अच्छी प्रेरणा मिलती है। बड़ी से बड़ी मुसीबत आने पर भी शांतचित्त रहते हुये बुद्धिपूर्वक अपने ज्ञान का उपयोग मुसीबत से छुटकारा दिला देता है। अगर इन दोनों का सही उपयोग किया जाये तो बहुधा जीवन में कोई मुसीबत या कठिन परिस्थिति आती ही नहीं। इसलिए आवश्यक है कि हम विनम्रतापूर्वक अपनी क्षमताओं का विकास तथा उनका उपयोग करते रहें।

नास्तिकता के भी कुछ लाभ हैं!!

शीर्षक देखकर किसी चक्कर में न पड़ जायें। अपने राम तो पूरे, घोर, घनघोर, घटाघोप आस्तिक हैं। नास्तिकता का सिर्फ शीर्षक दिया है बात तो भगवान की ही होगी। भगवान के नाम के बिना तो हम सांस भी नहीं लेते। अपने जीवन के आरम्भ, मध्य तथा अन्त को भगवान की इच्छा का फल ही मानते हैं। नास्तिकता के बारे में बात करते हुये हम नास्तिकता का विरोध नहीं करेंगे बल्कि इसमें से कुछ अच्छा ही ग्रहण करेंगे। तुलसीदासजी कहते हैं :

गरल सुधा रिपु करहिं मितार्ई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कषा करि चितवा जाही।— मानस 5/4/1-2
भावार्थ भगवान कृपा कर जिसकी ओर देख लें उसके लिए विष अमृत के समान हो जाता है, शत्रु मित्रता करने लगते हैं, सागर गायें के खुर के समान छोटा हो जाता है, आग ठण्डी हो जाती है, हे गरुड़! उसके लिए सुमेरु पर्वत भी रजकण के समान बन जाता है।

विष में से अमृत का ग्रहण करने का दृष्टांत लेकर हमें नास्तिकता में भी कुछ ऐसी बातें दिखाई देती हैं जो कि स्वयं को भगवान के ज्यादा नज़दीक ले जाती हैं। अगर कोई आपसे पूछे कि दुर्गुण आस्तिक और सगुण नास्तिक में से कौन श्रेष्ठ है तो आप स्वयं अपना उत्तर जानते ही हैं। सारा दिन भगवान की घंटिया बजाकर अगर किसी ने दूसरों को दुख ही देना है तब तो उससे अच्छा

वह नास्तिक ही है जो दूसरों के कल्याण में लगा रहता है। लेकिन अगर कोई आस्तिक भी है तथा दूसरों के कल्याण में भी लगा रहता है तब तो उससे श्रेष्ठ और कोई नहीं। नास्तिक व्यक्ति में कुछ खूबियां होती हैं जिनका लाभ आस्तिक भी ले सकते हैं।

नास्तिक व्यक्ति में जिम्मेवारी की भावना ज्यादा होती है। आस्तिक व्यक्ति तो यह मान लेता है कि भगवान सब कुछ नियन्त्रित कर रहे हैं। इसलिए वह अपने समस्त कर्मों को भगवान की इच्छा के फलस्वरूप हुआ मान लेता है। इन कर्मों में अच्छे तथा बुरे दोनों तरह के कर्म हो सकते हैं। दूसरी तरफ नास्तिक के लिए भगवान का अस्तित्व नहीं होता। इससे उसको मानना पड़ता है कि जो कुछ भी होता है उसे वह स्वयं ही करता है। कर्मफल हैं या नहीं इससे उसको कोई लेना-देना नहीं होता। प्रत्यक्ष वह क्या कर रहा है और उसका क्या परिणाम हो रहा है यही उसके लिए महत्वपूर्ण होता है। इस कर्ममयी संसार में यह भावना बहुत महत्वपूर्ण है।

नास्तिकता के भी कई भेद हैं। लेकिन मुख्य तो दिगभ्रमित नास्तिकता है बिल्कुल उसी तरह जैसे दिगभ्रमित मूर्तिपूजा है। इसमें भगवान के प्रचलित स्वरूप को नकार दिया जाता है और कहा जाता है कि हमारे लिए यह संसारचक्र या जीवन ही भगवान है या भगवान है ही नहीं। इस तरह भगवान शब्द से तो विरोध हो जाता है लेकिन इस शब्द की जो मूल भावना है वह बनी रहती है। भगवान

के स्वरूप इतने हैं कि हम उनके बारे में कल्पना भी नहीं कर सकते। एक स्वरूप को छोड़कर दूसरे को मानने लगना या सब प्रचलित और कल्पित स्वरूपों को छोड़ सृष्टि के बारे में एक नई कल्पना करना दिगभ्रमित नास्तिकता ही है।

नास्तिकता का स्वरूप कुछ भी हो इससे जो सबसे बड़ा फायदा है वह यह कि व्यक्ति स्वयं पर विश्वास करने लगता है। 'अपने भाग्य के लिए हरेक व्यक्ति स्वयं ही जिम्मेवार है' यह नास्तिकों का मूलमंत्र हो सकता है और आस्तिकों के लिए एक प्रेरणास्रोत। भगवान पर विश्वास करें लेकिन भगवान ने जो क्षमतायें दी हैं उन पर भी विश्वास करें।

दो महीने पहले एक सज्जन से भगवान के विषय पर चर्चा चल रही थी। भगवान के विषय में चर्चा करना सूर्य को दीया दिखाने के समान ही है। क्योंकि कहते हैं,

सदियों फिलास्फी की चुनां और चुनीं रही,

लेकिन खुदा की बात जहां थी वहीं रही।

चर्चा से, तर्क—वितर्क से, ज्ञान से भी हम भगवान को नहीं पा सकते। भगवान को पाने का साधन तो भक्तिभावना, समर्पण तथा स्वयं भगवान की इच्छा है। तर्क—वितर्क तो बौद्धिक कसरत है। दंड—बैठक लगाकर, दौड़ लगाकर हम शरीर की कसरत कर लेते हैं, चर्चा से दिमाग की कसरत हो जाती है। यह एक तरह से रस्साकशी है। जिसमें कभी एक तो कभी दूसरा व्यक्ति रस्से को अपनी ओर

खींच लेता है। भगवान का अनुभव तो शब्दातीत है। इसके बारे में क्या कहा जा सकता है या क्या समझाया जा सकता है।

तो उन सज्जन का मानना था कि अच्छे की तरह बुरे कर्म भी हम भगवान की इच्छा से ही करते हैं। जबकि अपने राम का मानना है कि भगवान को हमारे अच्छे या बुरे कर्मों से कुछ लेना-देना ही नहीं है। इस बारे में श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के वचनों :

न कर्तृत्वं न कर्माँर्लोकस्य सृजति प्रभुः । न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ।।
ईश्वर में न तो कर्त्तापन है, न वह इस लोक के कर्म करते हैं, न ही कर्मफलों से उनका सम्बन्ध है। ये (कर्मादि) अपने स्वभाव से ही (प्रकृति के गुणों द्वारा) कार्य करते हैं। -5/14

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः । अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।।
ईश्वर न तो किसी का पाप स्वीकार करते हैं और न ही पुण्य। जीव अज्ञान से आवृत्त (ढके हुए) ज्ञान के द्वारा (इस सम्बन्ध में) मोहित रहते हैं। -5/15

को हम प्रमाण मानते हैं। लेकिन साथ ही हमारा यह मानना भी है कि भगवान बड़े हैं तो बड़ी बात ही करेंगे। भगवान बड़े हैं इसलिए उनको बड़ाई स्वयं ही मिल जाएगी। भगवान श्रीकृष्ण को गिरधारी क्यों कहते हैं? क्योंकि उन्होंने पर्वत को उठा लिया था। अब पर्वत तो हनुमानजी ने भी उठाया फिर भी गिरधारी तो भगवान को ही कहेंगे न। क्योंकि बड़ाई तो बड़ों को ही मिलेगी। यह एक

स्वाभाविक बात है। इसी के अनुसार अपने कर्मों को भगवान के अर्पण कर भगवान की बड़ाई करना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति ही है। लेकिन इसमें ध्यान रखना होता है कि अपने अच्छे कर्म ही भगवान को अर्पित करने हैं तथा उनका श्रेय ही भगवान को देना है। यह मान कर चलें कि अपने समस्त अच्छे कर्म हम भगवान की इच्छा से प्रेरित होकर करते हैं। अपनी दुर्भावनाओं से ग्रस्त होकर हम बुरे कर्म करते हैं। इसलिए यह मानें कि जो तो अच्छा हो गया वह भगवान की इच्छा से हुआ और जो बुरा हुआ वह हमने स्वयं किया। ऐसा क्यों मानें?

आपको अपना बच्चा, माता-पिता, भाई-बन्धु, मित्रादि जो भी प्रिय है उसे आप कुछ अच्छा देना चाहेंगे या बुरा। यही बात भगवान के विषय में सोच लें। अगर आपको भगवान प्रिय नहीं हैं तो अवश्य ही आप भगवान को अपने बुरे कर्म देना चाहेंगे। इस सम्बन्ध में दूसरी बात यह है कि अपनी गलती को ठीक करने के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि अपनी गलती को स्वीकार किया जाये। अगर हम कोई बुरा या पाप कर्म करते हैं तो यह मानना पड़ेगा कि यह कर्म हमसे हुआ। अगर हम यह सोच लें कि बुरा कर्म भी भगवान की इच्छा से ही हुआ तो सुधार होने में बहुत देर लग जायेगी। शीघ्र उन्नति का यही रास्ता है कि हम अच्छाई भगवान को देते रहें बुराई अपने पास रख लें। हम जिसको जो देते हैं वही हमें उससे प्राप्त होता है। हम भगवान को अच्छाई देंगे तो अच्छाई ही पायेंगे, बुराई भगवान को क्यों दें।

अपनी बुराई तथा अच्छाई दोनों ही भगवान को अर्पित कर देना भी भगवान की प्राप्ति का एक मार्ग है लेकिन साधारण व्यक्ति के लिए इसकी विधि बहुत कठिन है। इसके लिए बहुत अधिक समर्पण तथा पूर्ण अद्वैत भावना का विकास करना होता है। फिर सुख—दुख, मान—अपमान, लाभ—हानि, जीवन—मृत्यु, सर्दी—गर्मी, मेरा—तेरा किसी भी तरह के द्वैत के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहता। ऐसी अद्वैत भावना में स्थित होकर ही अपने समस्त कर्मों को भगवान की इच्छा माना जा सकता है। वास्तव में ऐसी अवस्था में व्यक्ति से कोई बुरा कर्म होता ही नहीं। अगर कोई कर्म लौकिक रूप से बुरा दिखाई भी दे तो उसके मूल में कोई दृढ़ कर्मबन्धन ही होता है न कि व्यक्ति की स्वयं की आसक्ति या दुर्भावना। साधारण व्यक्ति में अहंता—ममता के चलते ऐसी भावना का विकास बहुत कठिन है। साधारण व्यक्ति के लिए तो साधारण अभ्यास ही चाहिए। अपने ठहरे साधारण व्यक्ति तो साधारण अभ्यास ही करेंगे। साधारण अभ्यास यह है कि जो अच्छा किया वह भगवान की इच्छा से किया और जो बुरा किया वह हमने स्वयं किया। अभ्यास का तरीका आपको बता देते हैं। भगवान से प्रार्थना करें तथा प्रार्थना करते हुए उसके अनुसार अपनी भावना का भी विकास करें :

‘हे प्रभु! मैं अधम तो जन्म, कर्म तथा स्वभाव से ही नीच हूँ। पापकर्म करना ही मेरी वृत्ति है। आपकी कितनी कृपा है कि कभी—कभी मुझसे कोई अच्छा कर्म भी करवा लेते हो। लेकिन प्रभु! स्वभाव तथा वृत्तियों से बंधा मैं बुरे कर्म करता ही

रहता हूँ। मुझ पर ऐसी कृपा करें, मुझे ऐसी बुद्धि तथा प्रेरणा दें जिससे कि मैं पापकर्म करने से विमुख हो जाऊँ। प्रभु! मैं अपने पुण्यकर्म आपको अर्पित करता हूँ क्योंकि ये कर्म वास्तव में आपनके ही किये हैं। जो पापकर्म मैंने किये हैं उनके फल का भोग मैं स्वयं ही करूँगा। आप मुझे प्रिय हैं मैं आपको पापकर्म कैसे दे सकता हूँ। पापकर्मों को आपसे सामर्थ्य पाकर मैं स्वयं ही भोगूँगा।'

ऐसी भावना रखने पर प्रभु हमसे बहुत प्रसन्न भी हो सकते हैं। प्रभु यह विचार भी कर सकते हैं कि देखो मेरा यह भक्त कितना भला है। बाकी भक्त तो अपने पाप काटने के लिए मेरी शरण में आते हैं लेकिन यह भक्त तो अद्भुत है। यह पुण्य तो मेरे अर्पण कर रहा है लेकिन पाप स्वयं रख रहा है। ऐसा होने पर संभवतः प्रभु हमें पाप-पुण्य के बखेड़े से ही मुक्त कर दें।

अब यह समझ लें कि नास्तिकता से हमें जिम्मेवारी की भावना सीखनी है। अपने कर्मों का उत्तरदायित्व स्वीकार करना है। ऐसा करने से ही हम अपने कर्मों की व्यवस्था सही ढंग से कर सकते हैं। अभी इस सम्बन्ध में आगे भी चर्चा जारी रखेंगे। जय राम जी की।

प्रारब्ध या पुरुषार्थ

“भाग्य को वही व्यक्ति दोष देते हैं जो स्वयं कुछ नहीं कर सकते।”, “पुरुषार्थ से मनुष्य अपना भाग्य स्वयं बना लेता है।” ऐसे बहुत से वाक्य हैं जो हमारा उत्साह बनाये रखते हैं। लेकिन क्या यह वास्तव में सही है कि प्रारब्ध या भाग्य में वही विश्वास करते हैं जो स्वयं प्रयत्न नहीं कर सकते। मैं तो ऐसा नहीं समझता। शांत होकर विचार करें तो पता लगता है कि हमारे जीवन में दो तिहाई प्रभाव भाग्य का रहता है तथा एक तिहाई पुरुषार्थ का। कई बार हम कितने भी प्रयत्न क्यों न कर लें लेकिन सफल नहीं होते और कई बार सामान्य प्रयत्न से ही सफल हो जाते हैं। ऐसा भाग्य के कारण ही होता है। हमारे एक काफी सुलझे हुये सहायक हैं जो यह मानते हैं कि अपना नुकसान कोई भी नहीं करना चाहता। बात ठीक भी है। व्यक्ति कोई भी कार्य अपने लाभ को सोचकर ही करता है। लेकिन कई बार कार्य से लाभ की बजाय हानि हो जाती है। कार्य के लिए प्रयत्न सही ढंग से किये गये होते हैं, मेहनत में भी कोई कमी नहीं रहती लेकिन फिर भी जिस असफलता की कभी कामना नहीं की होती वह स्वयं सामने आकर खड़ी हो जाती है। ऐसा भाग्य के प्रभाव से ही होता है। अगर अपनी इच्छा से ही सब कुछ होने लगे तो संसार में हर कोई सुखी, धनी, बलवान तथा समर्थ बन जाये। लेकिन ऐसा नहीं है। भाग्य का एक थप्पड़ मनुष्य की समस्त स्वतन्त्र इच्छाओं का कचूमर निकालने के लिए पर्याप्त है।

अगर कोई व्यक्ति बार-बार प्रयास करने पर भी असफल होता है तो क्या वह हिम्मत हार कर बैठ जाये या फिर उसके लिए आशा की कोई किरण शेष है। सर्वथा असफल व्यक्ति के लिए भी सदैव आशा शेष रहती है उसी के बारे में तो यहां बात करनी है। पहले हम यह देख लें कि भाग्य और पुरुषार्थ में कौन श्रेष्ठ है।

हमारे एक बुजुर्ग हैं जो भाग्य और पुरुषार्थ दोनों को मिलाकर चलते हैं। व्यापार करते हैं और जिन दिनों उन्हें कोई अच्छा सौदा हाथ लगा होता है उनका मानना होता है कि पुरुषार्थ मुख्य है। ईश्वर ने हमें कर्म करने के लिए ही इस लोक में भेजा है। अगर हम कर्म करेंगे तो फल अवश्य मिलेगा। लेकिन जिन दिनों कोई नुकसान हो जाता है, मंदा छाया होता है फिर उनका झुकाव भाग्य की तरफ हो जाता है। उस समय वे मानने लगते हैं कर्म भी हम भाग्य के आश्रित होकर ही करते हैं। भगवान की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। पुनः कुछ दिनों बाद कोई लाभ हो जाता है तो फिर पुरुषार्थी बन जाते हैं।

बात थोड़ी हंसी की लगती है कि देखो कैसे बार-बार अपना दल बदल रहे हैं लेकिन इस स्थिति से भी सीखने को मिलता है। जब तक पुरुषार्थ कर सकें तब तक उससे न टले और जब कुछ बनता दिखाई न दे तो भाग्य के बारे में भी विचार कर लें। इस तरह हमें भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का सहयोग मिलता रहता है। इनमें से जिसकी कमी हो जाये उस कमी को पूरा करने का

प्रयास करें। अगर हमारे शरीर में विटामिन ए की कमी हो जाये तो उसके लिए तो विटामिन ए की खुराक ही लेनी पड़ेगी। विटामिन ए की कमी विटामिन बी से तो दूर नहीं होगी। अगर आपका पुरुषार्थ ठीक-ठाक है तो कुछ लक्षणों से भाग्य के बारे में जाना जा सकता है।

अगर आपके जीवन के महत्वपूर्ण कार्य हल्के प्रयास से ही हो जाते हैं तो संभवतः आपके लिए भाग्य का बन्धन न्यूनतम है। ऐसे स्थितियों में असफलता दूर करने के लिए अपने पुरुषार्थ का ही आश्रय लें।

अगर आपको जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों के लिए कुछ प्रयास करना पड़ता है तथा उनको होने में कुछ समय भी लगता है तो भाग्य का मध्यम बन्धन आप के ऊपर लागू होता है।

बहुत प्रयास करने के बाद ही आपके जीवन के कार्य होते हैं या कई बार नहीं भी होते हैं तथा कई बार ऐसा लगता है कि कार्य सफल हो गया लेकिन बाद में वह कार्य निष्फल हो जाता है तो आपके लिए भाग्य का प्रबल प्रतिबन्ध है। बहुत ज्यादा पुरुषार्थ करने पर भी भाग्य के ऐसे बन्धन को तोड़ा नहीं जा सकता।

भाग्य के प्रतिबन्ध से कैसे मुक्त हुआ जाये?

भाग्य के प्रतिबन्धात्मक फल से मुक्त होने के लिए सबसे अच्छा उपाय है अध्यात्मिक अभ्यास। इसके अन्तर्गत जप का प्रभाव सबसे ज्यादा है। पिछले

महीने अष्टांग योग में बताई गई सहज प्राणायाम की विधि के अनुसार जप करना सबसे अच्छा रहेगा। जप के साथ अपने अध्यात्मिक ज्ञान को भी बढ़ाते रहें। श्रेष्ठ ज्ञान की अग्नि में समस्त निकृष्ट कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं। अध्यात्मिक अभ्यास करते रहने से स्वयं में जो नकारात्मक भावनायें होती हैं जैसे कि क्रोध, असंयम, भय आदि उनका भी शमन हो जाता है। नकारात्मक भावनाओं का शमन होने से सकारात्मक कर्म करने का सामर्थ्य स्वयं ही बढ़ जाता है। जितना अधिक अध्यात्मिक अभ्यास प्रबल होता जायेगा उतना शीघ्र निकृष्ट कर्मों के फल तथा संस्कार नष्ट होकर भाग्य की अनुकूलता प्राप्त होने के अवसर बढ़ते जायेंगे। इसके अतिरिक्त भाग्य के विभिन्न प्रतिबन्धों को खोलने के सांकेतिक उपाय भी होते हैं, जिनका निर्धारण प्रतिबन्ध विशेष का अध्ययन करने के बाद किया जा सकता है।

जब गणेश भूखे ही रह गये

कुबेर को एक समय अपने धन और सामर्थ्य का बहुत अभिमान हो गया। अपने ऐश्वर्य का प्रदर्शन करने के लिए उन्होंने एक समारोह करने का विचार किया। सबसे पहले कुबेर कैलाश पर्वत पर भगवान शिव को निमन्त्रण देने गये। शिव कुबेर के इष्ट हैं, शिवकृपा से ही कुबेर के पास सदैव धन बना रहता है। चाहे कुबेर कितना ही खर्च क्यों न कर लें लेकिन शिव का उन्हें वर है कि उनका कोष कभी खाली नहीं होगा। भगवान शिव सबके हृदय की बात भी जानते हैं सो उनसे कुबेर का उद्देश्य भी छिपा न रहा। भगवान ने तो आने से मना कर दिया लेकिन इतना कह दिया कि मेरा पुत्र गणेश तुम्हारे समारोह में अवश्य आयेगा। कुबेर को निराशा तो हुई यदि भगवान शिव स्वयं उनके समारोह में आ जाते तो उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ जाती। लेकिन इतना तो अच्छा ही हुआ कि शिव परिवार में से गणेश तो आ रहे हैं। कुबेर ने एक बहुत बड़ा आयोजन करने का विचार किया ताकि किसी को शिव की कमी महसूस न हो।

नियत दिन कुबेर में आयोजन में समस्त देवी-देवता, श्रेष्ठ ऋषि-मुनि, राजादि पहुँच गये। कुबेर ने समारोह के लिए एक विशेष भवन का निर्माण करवाया था जिसमें भाँति-भाँति के पकवान सजाकर रखे हुये थे। गणेश समारोह में मुख्यातिथि थे। गणेश सबसे बाद में पहुँचे तथा आते ही उन्होंने भोजन के लिए कह दिया। कुबेर ने बहुत तरह के स्वादिष्ट पकवान प्रस्तुत कर

दिये। गणेश पलक झपकते ही सब पकवान खा गये तथा और माँगने लगे। कुबेर ने और भोजन प्रस्तुत कर दिया तथा उसे भी गणेश ने तुरन्त समाप्त कर दिया। इस तरह गणेश ने समस्त अतिथियों के लिए बना खाना कुछ ही देर में चट कर दिया तथा और माँगने लगे। कुबेर ने तुरन्त अपने हलवाईयों को और खाना बनाने के लिए कहा। शीघ्रता दिखाते हुए हलवाईयों ने बहुत सा खाना बना दिया। लेकिन गणेश का पेट था कि भर ही नहीं रहा था। हलवाई खाना बनाते जाते गणेश खाते जाते। इस तरह कुबेर का समस्त राशन ही समाप्त हो रहा था। लेकिन यह क्या, गणेश तो अब भी भूखे थे तथा पहले की तरह खाना माँग रहे थे। जितना जल्दी खाना बनता उससे पहले गणेश उसे चट कर जाते। जब गणेश से खाने के लिए प्रतीक्षा न की गई तो वे उठे और रसोई में जो कुछ बचा था उसे भी चट कर गये। कुबेर ने जो खाना हजारों अतिथियों के लिए तैयार करवाया था उसे अकेले गणेश ही खा गये। अब गणेश फिर खाना माँगने लगे। लेकिन कुछ बचा होता तो मिलता। कुबेर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। गणेश बोले, 'इसे तुम समारोह कहते हो, यहां तो खाने के लिए भी कुछ नहीं है।' कुबेर ने सोचा समारोह में आये हुये हजारों अतिथि भी भूखे रह गये तथा एक अकेले गणेश भी उनके समारोह से सन्तुष्ट न हुये। कुबेर ने प्रार्थना की, 'प्रभु! आप कुछ देर प्रतीक्षा करो मैं अभी और भोजन की व्यवस्था करवा देता हूँ।' लेकिन गणेश बोले, 'क्या तुमने हमें भूखा बैठाये रखने के लिए यहां बुलाया

है। गणेश अपना रोष दिखाते हुये वापिस कैलाश चले गये। कुबेर डर गये कि कहीं शिव उन पर रोष न करें। कुबेर भी गणेश जी के पीछे ही कैलाश पर पहुँच गये। गणेश ने शिव से जाकर कहा, 'कुबेर के आयोजन में खाने के लिए ही कुछ नहीं था, मैं वहां से भूखा ही आया हूँ।' शिव कुबेर से बोले, 'कुबेर मैं यह क्या सुन रहा हूँ। तुम जैसा सामर्थ्यवान व्यक्ति आयोजन करे और एक बालक को भी सन्तुष्ट न कर सके। बेटा गणेश! तुम अपनी मां के पास जाओ और खाना खालो। मुझे विश्वास है कुबेर ने तुम्हें तृप्त करने का पूरा प्रयत्न किया होगा।'

कुबेर को अपनी भूल का अहसास हो गया। उन्होंने अहंकार किया था तथा भगवान अपने प्रियभक्त का अहंकार तो कभी रहने ही नहीं देते। अहंकार का पर्दा ही तो स्वयं को भगवान से दूर कर देता है। कुबेर ने अपने अहंकार का पोषण करने के लिए ही इतने बड़े समारोह का आयोजन किया था। उन्होंने भगवान शिव से भी अपेक्षा की कि वे समारोह में आकर उनके अहंकार का पोषण करें। भगवान स्वयं तो नहीं आये लेकिन उन्होंने गणेश को भेजकर कुबेर का अभिमान अवश्य भंग कर दिया। कुबेर को अब डर भी लग रहा था कि कहीं भगवान कुपित न हो जायें। लेकिन जब देखा कि भगवान को उन पर क्रोध नहीं आया तो तुरन्त शिव के चरणों में गिरकर उन्होंने अपनी गलती के लिए क्षमा प्रार्थना की। भगवान तो सदा से दयालु रहे हैं, उन्होंने बड़ी उदारता से कुबेर का अपराध क्षमा कर दिया।

स्वर्ग में कौन जाएगा?

हमारे एक सहयोगी हैं जोगिन्द्रपाल जी। पिछले दिनों उनसे अध्यात्म पर थोड़ी चर्चा चल रही थी। ऐसी बात नहीं है कि अध्यात्म पर सिर्फ साधु-संतों या वे व्यक्ति जो भगवान विषयक ज्ञान को बहुत अधिक समय देते हों उनका ही विशेषाधिकार है। कई बार साधारण परिस्थितियों में भी भगवान सम्बन्धी ज्ञान का विकास अपने आप होने लगता है। इस चर्चा में इन बन्धु द्वारा कही गई दो बातें अपने राम को बहुत अच्छी लगी, इसलिए एक पृष्ठ निकालकर विशेषरूप से इसका उल्लेख करनी की इच्छा हुई।

पहली बात, 'नरक में कोई जाना नहीं चाहता, जाना तो स्वर्ग में ही है। मरे बिना स्वर्ग भी कहाँ से मिलेगा, लेकिन मरना भी कोई नहीं चाहता।' दूसरी बात, 'भगवान को सब मानते हैं, लेकिन भगवान की कोई नहीं मानता।'

संसार में दुख कौन चाहता है? कोई भी नहीं। मनुष्य को पता भी होता है कि पापकर्म करने से दुख की प्राप्ति होती है। वह कभी पाप करना भी नहीं चाहता। लेकिन फिर भी ऐसा क्या है जो मनुष्य से पाप करवा लेता है। यह है मनुष्य का स्वभाव। मनुष्य जैसे विषयों का सेवन और मनन करता है उसके संस्कार उनके अनुसार ही हो जाते हैं। संस्कारों से आगे जाकर स्वभाव का निर्माण होता है। स्वभाव मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देता है। कोई मनुष्य स्वयं में अच्छा या बुरा नहीं होता। शरीर की दृष्टि से देखें तो सब मनुष्य समान

हैं। लेकिन स्वभाव तथा कर्म की दृष्टि से मनुष्यों में भिन्नता है। अच्छे कर्मों के लिए अच्छे स्वभाव तथा अच्छे संस्कारों का विकास आवश्यक है।

भगवान सब कर्मों, सब संस्कारों के आश्रय हैं। जो कुछ भी अच्छा हमें प्राप्त होता है वह वास्तव में भगवान की कृपा ही होती है। हम भगवान को बहुत मानते हैं, पूजा-पाठ, दान-पुण्य करते रहते हैं। क्या हम ये सब इसलिए करते हैं कि भगवान हमारी कोई माँग मान लें? अगर हम ऐसा करते भी हैं तो इसमें कुछ गलत भी नहीं है। अगर किसी को खुश करके अपनी कोई इच्छा पूरी करवानी है तो उसे माखन तो लगाना ही पड़ेगा। भगवान ठहरे दृश्य-अदृश्य सबके आधार, तो भगवान को खुश करने के लिए तो बहुत ही अधिक माखन लगाना पड़ता है। कई बार भगवान हमारी बात मान भी लेते हैं लेकिन हमें पता ही नहीं लगता यानि हम भगवान को मानते तो हैं लेकिन भगवान की नहीं मानते। भगवान ने हमें जो कुछ बताना होता है वह हमारे मन, बुद्धि, इन्द्रियों को प्रेरित करके बताते हैं। अगर हम भगवान की प्रेरणा को समझकर सही ढंग से कर्म कर लेते हैं तो स्वयंमेव ही भगवान हमारी बात मान जाते हैं। लेकिन कई बार अपने पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर भगवान की सुनी-अनसुनी भी करते रहते हैं।